गुरु नानक – सबद ५१

आवह भैणे गल मिलह अंक सहेलड़ीआह ॥

राग सिरिराग, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १७

आवहु भैणे गल मिलह अंक सहेलड़ीआह ॥
मिल कै करह कहाणीआ समरथ कंत कीआह ॥
साचे साहिब सभ गुण अउगण सभ असाह ॥१॥
करता सभ को तेरै जोर ॥
एक सबद बीचारीऐ जा तू ता किआ होर ॥१॥ रहाउ ॥
जाइ पुछह सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणीं ॥
सहज संतोख सीगारीआ मिठा बोलणी ॥
पिर रीसालू ता मिलै जा गुर का सबद सुणी ॥२॥
केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दात ॥
केते तेरे जीअ जंत सिफत करहि दिन रात ॥
केते तेरे रूप रंग केते जात अजात ॥३॥
सच मिलै सच ऊपजै सच महि साच समाइ ॥
सुरत होवै पत ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ ॥
नानक सचा पातिसाह आपे लए मिलाइ ॥४॥१०॥

सार: सार्थक संगति तभी फलती-फूलती है जब उसमें गहरी समझ, आपसी सम्मान और खुला संवाद हो। जिन लोगों ने इस गुण को विकसित कर लिया है वह संतोष और धैर्य जैसे गुणों को अपनाते हैं। उनके अनुभवों से सीखकर, हम मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं जो सबकी भलाई के लिए समर्पित होने के लिए प्रेरित करती है।आपसी विकास को बढ़ावा देकर, हम अपने जीवन और दूसरों के जीवन को समृद्ध बनाते हुए, सुखद और स्थायी संबंध बना सकते हैं।

आवहु भैणे गल मिलह अंक सहेलड़ीआह ॥
सभी साथियों को इकट्ठा करो और एक दूसरे को गले लगाओ।

मिल कै करह कहाणीआ सम्रथ कंत कीआह ॥
मिलकर एक साथ, उस सर्वव्यापी साथी के गुणों पर चिंतन करें।

साचे साहिब सभ गुण अउगण सभ असाह ॥१॥
सर्वव्यापी ऊर्जा का सच्चा मालिक सभी गुणों का प्रतीक है लेकिन हमारे द्वारा सर्वव्यापी एकता को न समझ पाना, हमारी कमी है। (१)

करता सभ को तेरै जोर ॥
सभी कुछ सर्वशक्तिमान रचयिता की शक्ति में है।

एक सबद बीचारीऐ जा तू ता किआ होर ॥१॥ रहाउ ॥
एकमात्र सत्य पर विचार करें, यदि सर्वव्यापी ऊर्जा हर जगह है तो इसके अलावा और क्या है? (१)(विराम)

जाइ पुछह सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणीं ॥
उन लोगों से पूछें जिन्होंने गुणी संगति पाई है और जानें कि उन्होंने यह महान बंधन कैसे बनाया?

सहज संतोख सीगारीआ मिठा बोलणी ॥
सहज समझ, संतोष और मधुर संवाद के माध्यम से।

पिर रीसालू ता मिलै जा गुर का सबद सुणी ॥२॥
प्रिय साथी, यानी गुण तभी प्राप्त होते हैं जब हम ऐसे ज्ञानपूर्ण शब्दों को सुनते हैं जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। (२)

केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दात ॥
प्रकृति में ऐसे विभिन्न रूप हैं जो समृद्ध संसाधन प्रदान करते हैं।

केते तेरे जीअ जंत सिफत करहि दिन रात ॥
सर्वव्यापी ऊर्जा, विभिन्न जीवों के रूप में, दिन-रात सराहनीय गुणों को दर्शाती है।

केते तेरे रूप रंग केते जात अजात ॥३॥
सर्वव्यापी ऊर्जा विभिन्न रूपों, रंगों की सभी सामाजिक और आर्थिक उच्च और निम्न श्रेणियों में व्यक्त की जाती है। (३)

सच मिलै सच ऊपजै सच महि साच समाइ ॥
सच्चे स्वयं से जुड़ने पर सत्य की उत्पत्ति होती है, व्यक्ति सच्चा बनकर सत्य के साथ एक हो जाता है।

सुरत होवै पत ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ ॥
अपने आस-पास के प्रति सचेत होने से सार्वभौमिक सम्मान विकसित होता है। ज्ञान के शब्द अंधकार से जागरूकता की ओर हमारा मार्ग रौशन करते हैं और भय को दूर करते हैं।

नानक सचा पातिसाह आपे लए मिलाइ ॥४॥१०॥
नानक कहते हैं कि सच्चा सर्वव्यापी मालिक अपनी सृष्टि की रचना को अपने भीतर विलीन कर लेता है। (४)(१०)

तत्त्व: गुरु नानक आत्म-जागरूकता और संसार के प्रति जागरूकता के महत्व पर प्रकाश डालते हैं, जो सार्वभौमिक सम्मान को बढ़ावा देती है। जागरूकता हमारे अंतर्संबंधों को प्रकट करती है जिससे हम अपने सच्चे स्वयं से जुड़ पाते हैं और ईमानदारी को अपनाते हैं। यह जागरूकता सम्मान, करुणा और समझ को प्रोत्साहित करती है, हमें निस्स्वार्थता, समानता और प्रेम की ओर ले जाती है, अंततः लोगों और हमारे आस-पास के वातावरण को सद्भाव में जोड़ती है।

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com